ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-162-165, YEAR JUNE 2016

स्वच्छता के अग्रदूत महात्मागांधी

❑ डॉ0 अर्जुन मिश्रा

महात्मा गांधी से प्रेरणा लेते हुए उनके जन्म दिन के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान वर्तमान मोदी सरकार द्वारा भुारू किया गया। स्वच्छता को एक मि ान के रूप में गांधी ने अपनाया था। उनका मानना था कि स्वच्छता के अभाव में ई वर की अनुभूति नहीं हो सकती। स्वच्छता को वे पाठ्यक्रमों में भाामिल करने के पक्षधर थे। उन्होंने गांवों, पवित्र स्थानों तथा नदियों के तटपर की जाने वाली गंदगी तथा उससे उत्पन्न बीमारियों की बार–बार चर्चा की। स्वच्छता को कांग्रेस के कार्यक्रमों में भाामिल करवाया। स्वच्छता पर बल देकर एक तरफ सफाई के प्रति लोगों को जागरूक किया दूसरी तरफ अस्पृ यता पर प्रहार किया। इस बात को बार–बार दुहराया कि गंदगी की सफाई किसी जाति वि ोष का कार्य नहीं है। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस की सरकार लंबे समय तक रही लेकिन गांधी के स्वच्छता मि ान को ठीक ढंग से आगे नहीं बढ़ाया गया। भारत आने से पूर्व गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में भी हिन्दुस्तानियों को स्वच्छ रहने के लिये प्रेरित करते थे। जब कोई इन्हें गंदा कहता था तो उसका प्रतिवाद करते थे तथा यह कहते थे कि जो गंदगी है वह परिस्थितियों की देन

गॉवों की गंदगी के लिए गॉव वालों को फटकार लगाते हुए कांग्रेस कार्यकर्ताओं को भी इस ओर ध्यान न देने के लिए फटकार लगाया। धार्मिक कार्यक्रमों से होने वाली गंदगी को एक दुर्गुण मानते हुये बीमारियों का कारण माना।1 भारतीय गॉवों में स्वच्छता के अभाव को लेकर न केवल गांधी चिंतित थे वरन् उसे दूर करने का सक्रिय प्रयास किया। स्वतंत्र भारत के गांवों के संदर्भ में उनका मानना था कि उस गॉव को उन्नत माना जायेगा, जहॉ उसकी प्रत्येक, जरूरत के उत्पादन के लिये हर प्रकार के ग्राम उद्योग हो, जहॉ कोई निरक्षर न हों, जहॉ की सड़के साफ हों, जहॉ भाौच के लिये निर्धारित स्थान हो और जहॉ के कुए कुछ साफ हो।''2 गांधी जी ने कहा कि ''एक आद र्ा भारतीय गॉव इस ढंग से बनाया जायेगा कि उसमें पूरी सफाई रखी जा सके। उसमें ऐसी कुटियॉ होंगी जिनमें, काफी हवा और रो ानी रहेगी और जो पांच मील के घेरे में प्राप्त होने वाली सामग्री से बनी होगी।..... गांव की गलियों और रास्तों में यथा संभव धूल नहीं होगीं।''3 गुजरात विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुये उन्होंने कहा कि ग्राम सेवक''सफाई और तन्दुरूस्ती के काम पर काफी ध्यान देगा। न सिर्फ उसका घर और आस–पास की जगह ही सफाई का नमूना पे ा करेंगे, बल्कि व झाड़ू–टोकरी लेकर सारे गॉव में सफाई रखवाने में भी मदद देगा।''4 अन्यत्र ग्राम सेवकों को सफाई के लिये उत्तरदायित्व देते हुये उन्होंने कहा कि ''ग्राम सेवकों की सबसे बड़ी समस्या सफाई की हल करनी होगी। जिन समस्याओं से कार्यकर्ता चकराते हैं और जिनसे ग्रामवासियों का स्वास्थ्य जर्जर हो जाता है तथा बीमारियॉ पैदा होती है, उन सब में अधिक से अधिक उपेक्षा इस समस्या की जाती है। अगर कार्यकर्ता स्वेच्छापूर्वक भंगी बन जाय, तो वह मलमूत्र इकट्ठा करके उसका खाद बना लेगा और गॉव के रास्तों पर झाड़ू लगा देगा। वह लोगों को बतायेगा कि कैसे और कहॉ उन्हें भाौच जाना चाहिए। वह उन्हें सफाई का महत्व और उसकी उपेक्षा करने से होने वाली महान हॉनि समझायेगा। गॉव वाले उसकी सुने या न सुनें, कार्यकर्ता अपना काम जारी रखेगा।''5

गांधी ने स्वच्छता को स्कूली पाठ्यक्रमों में भाामिल करने की आव यकता पर बल दिया। 20 मार्च 1916 को गुरूकुल कांगड़ी में दिये गये भाशण में उन्होंने कहा था ''गुरूकुल के बच्चों के लिये स्वच्छता और सफाई के नियमों के ज्ञान के साथ ही उनका पालन करना भी प्रि ाक्षण का एक अभिन्न हिस्सा होना चाहिए.........।''6 चंपारण सत्याग्रह के दौरान उन्होंने वहां की बदहाली, पिछड़ापन और गंदगी को

❑ एसो0 प्रोफेसर, राजनीतिविज्ञान विभाग, एस0पी0पी0जी0 कालेज, भोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) भारत

जनता को उससे उबारने के लिये उन्होंने नि चय किया। वहां पर न तो कोई कांग्रेस के कार्यकर्ता दिखाई देते थे न कोई, कांग्रेस का नाम लेवा था। कांग्रेस का अर्थ यहां पर वकीलों की खीचातानी थी। गांधी ने नि चय किया कि कथनीय नहीं करनी की आव यकता है। कोई भी काम करते समय कांग्रेस का नाम नहीं लिया जायेगा। वहां की गॉवों की गंदगी के सम्बन्ध में उन्होंने आत्मकथा में लिखा है– ''गॉवों में गंदगी की कोई सीमा न थी। गलियों में कचरा, कुओं में आस– पास कीचड़ और बदबू, आंगन इतने गंदे कि देखे न जा सके। बड़ों को स्वच्छता की ि ाक्षा की जरूरत थी। चम्पारण के लोग रोगों से पीड़ित देखें जाते थे।''8 गांधी स्वच्छता (साफ–सफाई) और ि ाक्षा के माध्यम से लोगों तक पहुॅचना चाहते थे। वे साथियों से सलाह कर गॉवों में पाठ ाला खोले जिसका प्रमुख उद्दे य स्वच्छता की ि ाक्षा द्वारा लोगों को वीमारियों से मुक्ति प्रदान करना था। हर पाठ ाला में एक पुरूष तथा स्त्री स्वयं सेवक रखे गये जो ि ाक्षा, सफाई के साथ दवा भी देते थे। सफाई का काम कठिन था, क्योंकि लोग गंदगी दूर करने को तैयार न थे। जो लोग मजदूरी करते थे वे भी हाथ से मैला साफ करने को तैयार न थे। इसके लिये डॉ0 देव (जो गांधी के आग्रह पर गोखले सोसाइटी से आये थे) ने कड़ी मेहनत की। वे स्वयं सेवकों की सहायता से अपने हाथों द्वारा एक गॉव की सफाई किये, लोगों के आंगन से कचरा साफ किया, कुॅओं के आस–पास के गड्ढ़े भरे, कीचड़ निकाला और गॉव वालों से 9 स्वयं सेवक देने का विनय पूर्वक बात करते रहे। इस कार्य का लोगों पर सकारात्मक प्रभाव भी पड़ा। गांधी लोगों को यह समझाते रहते थे कि यदि स्वच्छता का ध्यान रखा जायेगा, तो वे बीमार नहीं पड़ेगे जिससे बीमारी पर होने वाला रूपया बचेगा।

गांधी ने कांग्रेस के अधिवे ान में स्वच्छता पर ध्यान खीचा तथा स्वयं सेवकों से इस कार्य को पूरा करने के लिये कहाँ। भारत में राजनीतिक जीवन भाुरू करने के बहुत पहले कांग्रेस के कलकत्ता अधिवे ान में दक्षिण अफ्रीका से संबंधित प्रस्ताव पास करवाने गये थे। अधिवे ान के पूर्व वहां की गंदगी तथा प्रतिनिधियों में छूआछूत की भावना का वर्णन उ ह ा न आत्मकथा में किया है– ''गंदगी की हद नहीं थीं। चारों तफर पानी ही पानी फैल रहा था। पाखाने कम थे। उनकी दुर्गन्ध की याद आज भी मुझे हैरान करती है। मैने एक स्वयं सेवक को यह सब दिखाया। उसने साफ इंकार करते हुये कहा यह तो भंगी का काम है। ''मैने झाडू मांगा।..... पाखाना साफ किया।..... मैने देखा कि दूसरों को यह गंदगी जरा भी अखरती न थी. ..... रात के समय कोई–कोई कमरे के सामने ही निपट लेते थे।..... उसे साफ करने का सम्मान मैने ही प्राप्त किया।''10 गांधी जी बेलगांव में अपने सम्मान में आयोजित एक समारोह में कहा हमें प ि चम में नगरपालिकाओं द्वारा की जाने वाली सफाई व्यवस्था से सीख लेनी चाहिये।

गांधी जी अस्पृ यता से नफरत करते थे। उनका मानना था कि मैला ढोना एक जाति वि ोष का काम नहीं है। वे मलिन बस्तियें में जाकर अस्पृ य लोगों से मिलते थे। तथा वहां की द ा सुधारने का प्रयत्न करते थे। उन्होंने अन्य लोगों को भी ऐसा करने के लिये प्रेरित किया। इसके लिये उन्हें कीमत भी चुकानी पड़ी। एक समय ऐसा भी आया जब दलित परिवार को आश्रम में रखने के कारण आश्रम को सहयोग करने वाले लोगों ने हाथ खड़े कर दिये। परन्तु गांधी झूके नही। इस मुद्दे पर वे अपनी मां तथा पत्नी से भी नाराज हुए। वे स्वयं गंदगी तथा पाखाना साफ करते थे। नोवाखली की सद्भावना यात्रा के दौरान गांधी ने देखा कि भारारती मुस्लिम लड़कों ने संकरे रास्ते (पगदंड़ी) को गंदा कर दिया है। वे तुरंत सुखे पत्तों से उसे साफ करने लगे। जब मनु ने उनसे पूछा कि 'आपने यह काम मुझे क्यों नहीं करने दिया? आप इस तरह हमें क्यों भार्मिंदा करते हैं? तब गांधी ने हसतें हुये कहा ''तू नहीं जानती कि ऐसे काम करने से मुझे कितना आनन्द होता है।''11 वास्तवमें, सफाई का काम तब तक नहीं हो सकता जब तक लोग बोझ या दबाव में या दिखावे के लिये उस काम को करते हैं। जब वे गांधी की भॉति आनंदपूर्वक अपना कर्तव्य मानकर उस कार्य को करेंगे तो सफाई की समस्या जल्दी ही दूर हो जायेगी।

धर्म के नाम पर की जाने वाली गंदगी के भी

वे विरोधी थे। जब वे यात्रा करते हुये बनारस पहुॅचे तो वि वनाथ मंदिर और ज्ञानवापी के पास गंदगी देखकर आहत हुये।12 गांधी फिसलने वाली गलियों के रास्ते, मक्खियों की भिनभिनाहट तथा यात्रियों के कोलाहल के बीच जा रहे थे जो उन्हें असह्य लग रहा था। गांधी की दृष्टि में मंदिर के आस–पास भाांत, निर्मल, सुगंधित तथा स्वच्छ वातावरण बनाये रखना प्रबंधकों का काम होना चाहिए, लेकिन इसके विपरीत उन्हें गंदगी, पाखण्ड और ठगी दिखाई पड़ी। गांधी तो यहां तक कहते थे कि ''मैले भारीर और उस पर अ ुद्ध मस्तिष्क के साथ हम ई वर का आ ीर्वाद नहीं पा सकते। स्वच्छ भारीर किसी गंदी भाहर में वास नहीं कर सकता।''13 गांधी जी जैसा धर्मनिष्ठ व्यक्ति धर्म के नाम पर पाखण्ड और गंदगी का विरोध करता है तो अन्य लोगों पर वि ोषकर स्वयं सेवकों पर उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

गांधी जी स्वच्छता को स्वराज्य से जोड़ते हुए बनारस हिन्दू वि वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में कहा (4 फरवरी 1916) ''कोई भी कागजी लेख हमको कभी स्वराज्य नहीं दे सकता।..... केवल हमारा आचरण ही हमको उसके योग्य बनायेगा।..... कल मैं वि वनाथ मंदिर गया था और जब मैं उन गलियों में चल रहा था, तब इन विचारों ने मेरे हृदय को स्प ी किया। क्या यह उचित है कि हमारे पवित्र मंदिर की गलियॉ इतनी गंदी हो? गलियॉ संकरी, और टेढ़ी–मेढ़ी हैं। यदि हमारे मंदिर ही पिवत्रता और सफाई के नमूने नहीं हैं, तो हमारा स्वराज्य कैसे हो सकता है? क्या अंग्रेजों के भारत छोड़ते ही हमारे मंदिर धार्मिक पवित्रता, सफाई और भाांति के आलय बन जायेंगे? 14

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गांधी जी स्वच्छता के अग्रदूत थे। उनके जन्म दिन के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान की भाुरूआत एक सराहनीय कदम है। स्वच्छता सिर्फ सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है उसके लिये एन0जी0ओं0, समाचार माध्यमों को अपनी सक्रिय भूमिका अदा करनी होगी। सबसे बड़ी बात यह है कि जनता को स्वयं यह होगा कि सफाई हमारे लिये जरूरी है, स्वच्छता हमारा कर्तव्य है। गांधी ने रेलवे स्टे ान, बस अड्डे, बाजार, मंदिरों के परिसरों में मक्खियों, मच्छरों, चूहे के निवास को देखकर बदबूदार मांद कहा था। इसलिए इन स्थानों व अन्य सार्वजनिक स्थानों तथा अपने आस–पास को स्वच्छ रखना गांधी को सच्ची श्रद्धांजली होगी। सार्वजनिक स्थानों की सफाई से विदे ाी पर्यटक भी आकर्षित होंगे जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ''श्रम और बुद्धि के बीच जो अलगाव हो गया है, उसके कारण हम अपने गॉवों के प्रति इतने लापरवाह हो गये हैं कि वह एक गुनाह ही माना जा सकता है। नतीजा यह हुआ है कि दे ा में जगह–जगह सुहावने और मन भाव ने छोटे–छोटे गॉवों के बदले हमें धूरे जैसे गॉव देखने को मिलते हें। ..... गॉव के बाहर और आस–पास उतनी गंदगी होती है और वहॉ इतनी बदबू आती है कि अक्सर गॉव में जाने वाले को आंख मूंदकर और नाक दबाकर जाना पड़ता है। ज्यादेतर कांग्रेसी गॉव के बाि न्दे होने चाहिए, अगर ऐसा हो, तो उनका फर्ज हो जाता है कि वे अपने गॉवों को सब तरह से सफाई के नमूने बनायें। लेकिन गॉव वालों के हमे ाा के यानी रोज–रोज के जीवन में भारीक होने या उनके साथ घुलने–मिलने को उन्होंने कभी अपना कर्तव्य माना ही नहीं।.... हम अपने ढंग से नहा–भर लेते हैं, मगर जिस नदी, तालाब या कुएँ के किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही दूसरी कोई धार्मिक क्रिया करते हैं, और जिन जला ायों में पवित्र होने के विचार से हम नहाते हैं, उनके पानी को बिगाड़ने या गंदा करने में हमें कोई हिचक नहीं होती। हमारी इसी कमजोरी को मैं एक बड़ा दुर्गुण मानता हूँ।

इस दुर्गुण का ही नतीजा है कि हमारे गॉव की ओर हमारी पवित्र नदियों के पवित्र तटों की लज्जाजनक दुर्द ाा और गंदगी से पैदा, होने वाली बीमारियॉ हमें भोगनी पड़ती है।'' रचनात्मक कार्यक्रम, गांधी जी, नवजीवन प्रका ान मंदिर अहमदावाद, 2014, पृ0 24–25.

2. लैटर टू मुन्नालाल भााह, 4–4–1941, 73 : 42.
3. हरिजन 9.1.37, सर्वोदय, गांधी जी, नवजीवन प्रका ान, मंदिर, 2009, पृ0 144.
4. हरिजन, 31.8.34, सर्वोदय, गांधी जी, नवजीवन प्रका ान, मन्दिर, पृ. 14.
5. हरिहन 9.1.37, वही, पृ0 145.
6. गांधी वांगमय, भाग–13, पृ0 264.
7. आत्मकथा, महात्मागांधी, पृ0 357.
8. वही, पृ0 365
9. वही, पृ0 366–367.
10. वही, पृ0 194.
11. माहत्मा गांधी पूर्णाहुति, प्यारेलाल, नवजीवन प्रका ान मंदिर अहमदाबाद, 2002, पृ0 208.
12. ''मंदिर में पहुॅचने पर दरवाजे के सामने बदबूदार सड़े हुये फूल मिले। अन्दर बढ़िया संगमरमर का फ र्ा था पर किसी अन्ध श्रद्धालु ने उसे रूपयों से जड़वाकर खराब कर डाला था और रूपयों में मैल भर गया था। मैंने ज्ञानवापी के समीप गया। वहॉ मैने ई वर को खोजा, पर वह न मिला। इससे मन ही मन क्षुब्ध हो रहा था। ज्ञानवापी के आस पास भी गंदगी देखी। दक्षिण के रूप में चढ़ाने की मेरी श्रद्धा नहीं थी।'' टि0 10, पृ0 2.
13. यंग इंडिया– 19/11/1925.
14. गांधी

*****